भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी

उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी

श्री नितिन गडकरी जी, केन्द्रीय राजमार्ग मंत्री

श्री राजनाथ सिंह जी, केन्द्रीय रक्षामंत्री

श्रीमती स्मृति ईरानी जी, केन्द्रीय मंत्री

श्री जी. किशन रेड्डी, केन्द्रीय सांस्कृतिक मंत्री

श्री अनुराग सिंह ठाकुर, केन्द्रीय खेल मंत्री

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, केन्द्रीय कृषि मंत्री

श्री भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री

श्री अर्जुन मेघवाल, केन्द्रीय कानून मंत्री

श्री विजय संपलाजी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अनुसूचित जाति आयोग

श्री योगी आदित्यनाथ जी, मुख्यमंत्री (उ.प्र.)

श्री अरविन्द केजरीवाल जी, मुख्यमंत्री (दिल्ली)

श्री विजय रूपाणी जी, पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात

श्री केशव प्रसाद मौर्या, उपमुख्य मंत्री, उ.प्र.

श्रीमती आनन्दी बेन पटेल, राज्यपाल (उ.प्र.)

श्री भगत सिंह कोश्यारी, राज्यपाल, महाराष्ट्र

जनरल वी.के. सिंह, परिवहन राज्य मंत्री

श्री इन्द्रेश कुमार (आर.एस.एस.)

श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी, विदेश राज्य मंत्री

श्री कपिल पटेल, पंचायतीराज राज्य मंत्री

श्री वीरेन्द्र सचदेवा, अध्यक्ष भा.ज.पा., दिल्ली

श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी

स्वामी श्री श्री रवि शंकर जी

स्वामी श्री चिदानन्द सरस्वती जी

श्री मनोज तिवारी जी, सांसद दिल्ली

श्री गौतम गंभीर जी, सांसद दिल्ली

डॉ. डी वीरेन्द्र हेगड़े जी, धर्मस्थल कर्नाटक

श्री मनोज राजोरिया जी, सांसद करोली

श्री धन्य कुमार गुंडे, सदस्य अल्पसंख्यक आयोग

श्री प्रवेश वर्मा, सांसद दिल्ली

श्री सत्यनारायण जटिया-सांसद, श्री हर्षवर्धन-सांसद

श्री सतपाल सिंह, सांसद

श्री इकबाल सिंह लालपुरा, अध्यक्ष-राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग

धर्माधिकारी डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े, राज्य सभा सांसद

श्री अर्जुन मुंडे, केन्द्रीय जनजाति कार्यमंत्री

श्री पुष्पेन्द्र सिंह धामी, मुख्य मंत्री, उत्तराखण्ड

सुश्री ममता बेनर्जी, मुख्य मंत्री, पश्चिम बंगाल

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

उद्घाटन समारोह : रविवार, 26 नवम्बर 2023 प्रातः 10 बजे

स्थान : इन्दिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम परिसर, नई दिल्ली

आमंत्रित मुख्य अतिथि **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी**

दिव्य आशीर्वाद

दिव्य आशीर्वाद

भगवान महावीर 2550 वाँ निर्वाण महोत्सव

पावापुरी अहिंसा रथयात्रा

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मंगल प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज

भव्य उद्घाटन

माननीय श्री नितिन गडकरी जी, राजमार्ग केन्द्रीय मंत्री के कर कमलों द्वारा

पावापुरी अहिंसा रथ

भव्य उद्घाटन

माननीय श्री नितिन गडकरी जी, राजमार्ग केन्द्रीय मंत्री के कर कमलों द्वारा

आयोजक : भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)

पत्राचार कार्यालय : खण्डेलवाल श्री दि. जैन मन्दिर कॉम्पलेक्स, 2, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

केन्द्रीय कार्यालय : भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति, HAF Pocket-A, Sector-10, द्वारका, दिल्ली-110075

Ph : 011-45012830 +919643865634, +917011395716 mahaveer-nirvansamiti.in 2550nirvanutsav@gmail.com, 2550nirvanotsav@ahimsabharti.com

जैन धर्म : भगवान महावीर : पावापुरी अहिंसा रथ

जैन धर्म दुनिया के प्राचीनतम् धर्मों में से है। प्राचीन काल में भी द्रविड़ या व्रात्य के रूप में यहाँ जैन रहते थे। मोहनजोदड़ों और सिंधु घाटी की सभ्यता की खुदाई में अनेकों प्रमाण जैन धर्म के मिले हैं। अनेक पुरातत्वविदों, शिक्षाशास्त्रियों और नेताओं ने भी इसकी प्राचीनता का उल्लेख किया है।

जैन धर्म में 24 तीर्थंकर होते हैं, जबकि सिद्ध भगवान अनंत हैं। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) अरबों वर्ष पूर्व अयोध्या में जन्में थे, उनके पिता नाभिराय तथा माता मरुदेवी थीं। यशस्वी व सुनंदा से उनका विवाह हुआ। भरत (जिनके नाम से अपने देश का नाम भारत पड़ा) बाहुबली आदि उनके 101 पुत्र तथा ब्राह्मी-सुंदरी ये दो पुत्रियाँ थीं। उन्होंने राज्य करते हुए अपने पुत्र-पुत्रियों को भी अनेक कलाओं में पारंगत किया। बड़ी पुत्री ब्राह्मी को लिपि का ज्ञान कराया, जिससे ब्राह्मी लिपि प्रसिद्ध हुई। छोटी पुत्री सुंदरी को अंक ज्ञान कराया जिससे शून्य व अंकों का सृजन हुआ।

भगवान महावीर के पिता कुण्डपुर के राजा सिद्धार्थ थे, उनकी माता वैशाली गणतंत्र के अध्यक्ष राजा चेटक की पुत्री त्रिशलादेवी थीं। वर्धमान महावीर ने 30 वर्ष की आयु में संन्यास स्वीकार कर 12 वर्ष तक कठोर तपस्या कर केवलज्ञान पाया। 30 वर्ष तक अहिंसा, अनेकांत और सच्चे आत्मधर्म का उपदेश देकर 72 वर्ष की आयु में वे पावापुरी (बिहार) से मोक्ष पधारे।

महावीर स्वामी जैन धर्म के संस्थापक नहीं अपितु 24वें तीर्थंकर थे। उनके बाद कोई तीर्थंकर नहीं हुआ, किन्तु आचार्यों के उपदेशों से उनके सिद्धांतों का प्रचार होता रहा, आज भी हो रहा है।

महावीर के उपदेशों का सार अहिंसावाद, कर्मवाद और स्याद्वाद है। इन उपदेशों के द्वारा उन्होंने करुणा, पुरुषार्थ, समानता और विवेक-जन्य सहिष्णुता को मानवीय-आचरण का आधार निर्दिष्ट किया। सभी प्राणियों को कल्याण करने का समान अवसर प्रदान करने की दृष्टि से उनकी धर्म-सभाओं को समवसरण कहा गया।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच महाव्रत (पंचशील) मुनिगण धारण करते हैं तथा गृहस्थ अंशरूप से पालन करते हैं।

अहिंसा-मन, वचन, कार्य से किसी इंसान को, पशु-पक्षी को भी कष्ट नहीं देना, कीड़े-मकोड़े और पेड़-पौधों की भी सुरक्षा करना।

अहिंसा परमो धर्मः। जियो और जीने दो।

सत्य-सत्य बोलना, सच्चा मार्ग समझना और सच्चा व्यवहार करना, कपट षडयंत्र न करना। कठोर वचन नहीं बोलना, बुरा व्यवहार नहीं करने और न ही बुरे विचार रखना।

अचौर्य- चोरी, मिलावट या लूटपाट इत्यादि न करना।

ब्रह्मचर्य - जैन मुनि पूर्ण ब्रह्मचारी होते हैं जबकि श्रावक विवाह करके गृहस्थी का निर्वाह करते हुए, अणुव्रत (अंश) रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। स्त्रियों पर अत्याचार रोकने में ब्रह्मचर्याणुव्रत की उपयोगिता है। लिव इन रिलेशनशिप और अनैतिक व्यवहार समाज के लिए नुकसानदायक हैं।

अपरिग्रह - जरूरत से ज्यादा संसाधन इकट्ठे नहीं करना। ज्यादा संग्रह होने पर जनहित के कार्यों में लगा देना। वास्तव में दुनिया में गरीबी नहीं, गैर बराबरी है। परस्पर सहयोग से हम दूसरों के जीवन का स्तर ऊँचा उठा सकते हैं।

अनेकांतवाद (सापेक्षवाद) - एकांगी दृष्टिकोण नहीं अपनाना, सिर्फ अपने को ही सर्वश्रेष्ठ न समझना, किसी अपेक्षा से सामने वाला भी सही हो सकता है। अनेकांतवादी विचारधारा से परस्पर सम्मान बढ़ेगा। अनेकांतवाद विचार है तो स्याद्वाद उसे प्रस्तुत करने का तरीका।

क्षमा-मानवता को जीवित रखने के लिए किसी के द्वारा अपराध हो जाने पर क्षमा करना आना चाहिए। प्रतिशोध की आग में तो दुनिया भी राख हो जाएगी। क्षमा से सहिष्णुता, सह अस्तित्व का विकास होगा।

क्षमा करें और क्षमा मांग लें, जीत है इसमें हार नहीं,
क्षमा वीर का आभूषण है, कायर का श्रृंगार नहीं।

महावीर स्वामी इंद्रियों-विकारों को जीतकर जिन कहलाए और उनके अनुयायी जैन कहलाते हैं। इस मायने में कोई भी जैन बन सकता है। जैन वस्तुतः एक श्रेष्ठतम जीवन पद्धति है। सबके अस्तित्व में अपना अस्तित्व है। इसलिए किसी को भी एक सच्चा जैन (इंसान) नुकसान नहीं पहुँचाता। जैन धर्म 'जियो और जीने दो' Live & Let Live (अर्थात् प्रत्येक प्राणी को जीने का अधिकार है) के सिद्धांत पर पूर्णतः विश्वास करता है।

''हिंसा पीड़ित विश्व, राह महावीर की तकता है।
वर्तमान को वर्धमान की, आवश्यकता है।।''

-(गीतकार, संगीतकार एवं गायक रविन्द्र जैन जी)

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

उद्देश्य :- भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाण महोत्सव दीपावली 2023 से दीपावली 2024 पर्यन्त ''अहिंसा वर्ष'' के रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जायेगा। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और अनेकांत के सन्देश से पूरे मानव समाज को आलोकित करने वाले भगवान महावीर की शिक्षाओं और उपदेशों के प्रचार-प्रसार हेतु यह समिति कार्यरत है।

भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव के कार्य को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने के लिए समूचे जैन समाज (जैन धर्म के चारों पंथों) द्वारा भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति का गठन किया गया है। भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव के कार्य को विशाल रूप देने के लिए प्रदेशीय, सम्भागीय एवं जिला स्तर पर समितियाँ गठित कराई गई हैं।

इस आयोजन के माध्यम से यह भी इंगित करना समीचीन है कि भगवान महावीर स्वामी के नाम का सुमिरन ही नहीं किया जाना है, प्रत्युत यह भी रेखांकित किये जाने का प्रयास है कि उनके अहिंसा और अनेकांत के दर्शन की सम्यक् समझ धरती के संरक्षण व संवर्धन एवं मानवीय चित्त की शाश्वत प्रसन्नता के लिए एक मंगलमय आशादीप बनें।

दिशा निर्देश :-

- पावापुरी अहिंसा रथ के माध्यम से समस्त भारतवर्ष में अहिंसा का प्रचार-प्रसार किया जाएगा।
- भगवान महावीर के उपदेशों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रमुख स्थानों पर सार्वजनिक समारोह आयोजित किये जाएँ, जिसमें मुख्यतः जैन कला, साहित्य, चित्र, स्थापत्य और पांडुलिपियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएँ।
- जैन समाज के भामाशाहों से अनुरोध है कि हर जैन तीर्थ पर एक अस्पताल तथा एक वैटनरी (Veterinary) अस्पताल बनाए जाएँ, जिससे कि वहां पर रहने वाले हर जाति के लोग इसका भरपूर लाभ ले सकें एवं भगवान महावीर के आदर्शों तथा उद्देश्यों से जुड़े। इसके साथ ही साक्षरता बढ़ाने के लिए महाविद्यालय, स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल आदि प्रारम्भ करें।
- शिक्षा संस्थानों में महावीर तथा अहिंसा का एक पाठ, अध्याय जरूर हो सके, इसके लिए प्रयास करें तथा जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में योगदान तथा इतिहास के विषय में व्याख्यान मालाएं आयोजित की जाएँ।
- हरियाली में खुशहाली - इस अवसर में सम्पूर्ण जैन समाज एवं भारत वासी पूरे एक वर्ष में 'हर घर वाटिका अहिंसा वाटिका' अभियान के अंतर्गत 2.5 करोड़ पेड़ लगाकर 'परस्परोपग्रहो जीवयाम्' उपदेश को सार्थक करें।
- जैन धर्म तथा भगवान महावीर के जीवन व उनके उपदेशों के संबंध में आकाशवाणी, टेलीविजन तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा पूरे महोत्सव वर्ष में नियमित रुप से वार्ताओं, चर्चाओं आदि का आयोजन किया जाएँ।
- जैन तीर्थक्षेत्रों एवं भगवान महावीर से संबंधित डोक्यूमेंटरी फिल्मों का निर्माण व प्रदर्शन किया जाएँ।
- स्थानीय सरकार से अनुरोध कर ''अहिंसा वर्ष'' के शुभ अवसर पर सड़क, चौराहे, उद्यान, अस्पताल, कॉलेज आदि के नामकरण भगवान महावीर स्वामी के नाम से कराये जाएँ एवं प्रसिद्धस्थलों में धर्मचक्र, कीर्तिस्तंभ या शिलापट्ट लगवाये जाएँ।
- विश्वविद्यालयों व अन्य शिक्षण संस्थाओं में भगवान महावीर के जीवन व सिद्धांतों पर विचार गोष्ठी की जाएँ।
- देश-विदेश के समाचार पत्र, पत्रिकाओं से अनुरोध किया जाएँ कि वे दीपावली 2023 के अवसर पर भगवान महावीर के जीवन व उपदेशों से संबंधित लेखों तथा 'वीर निर्वाण विशेषांक' का प्रकाशन करें।
- भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति को क्षेत्रीय स्तर पर गठन किया जाएँ तथा संबंधित राज्य सरकारों के सहयोग से महोत्सव को भव्य स्तर पर मनाया जाएँ।

भगवान महावीर का शुभ संदेश :

● जीव की रक्षा करना धर्म है। ● अहिंसा परमो धर्मः। ● सम्यग्दर्शन धर्म का मूल है। ● अहिंसा धर्म का लक्षण है। ● विनय मोक्ष का द्वार है। ● धर्म बिना धार्मिक नहीं और धार्मिक बिना धर्म नहीं। ● परस्पर उपकार करना जीव का धर्म है। ● जीओ और जीने दो। ● ऋषि बनो या कृषि करो।

रथ प्रवर्तन हेतु आवश्यक जानकारियाँ :-

- 'पावापुरी अहिंसा रथ' एक बड़े वाहन (26' लाबाई, 7'चौड़ाई, 11'ऊँचाई) पर निर्मित हैं, जिसमें भगवान महावीर स्वामी की प्रतिष्ठित प्रतिमा विराजमान है। रथ की संरचना भगवान महावीर स्वामी की निर्वाण भूमि पावापुरी की प्रतिकृति के रूप में की गई है।
- 'पावापुरी अहिंसा रथ' के साथ लाउडस्पीकर, अभिषेक-आरती व्यवस्था एवं प्रचार सामग्री रहेगी।
- निर्वाण महोत्सव के वार्षिक या स्थाई सदस्य बनकर महोत्सव के सहयोगी बन सकते हैं।
- 'पावापुरी अहिंसा रथ' के साथ एक विद्वान, एक लेखपाल, एक ड्राइवर, दो सहायक व्यक्ति रहेंगें।

पावापुरी अहिंसा रथ कार्यक्रम :-

- 'पावापुरी अहिंसा रथ' के भव्य स्वागत के लिए सभी जिलो के जिलाधीशों एवं शासकीय अधिकारियों, स्थानीन विद्वान श्रेष्ठी व राजनैतिक लोगों का विशेष सहयोग लिया जा सकता है।
- आपको पूर्व निधारित स्थल से अपने यहाँ शोभा यात्रा निकालने के लिए 'पावापुरी अहिंसा रथ' को निमत्रंण देने जाना होगा। 'पावापुरी अहिंसा रथ' पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुँच जायेगा। जिसे नगर के बाहर अथवा सुविधाजनक स्थान से आगवानी करके बैण्ड-बाजों से शोभा यात्रा के साथ सुन्दर एवं प्रमुख स्थान पर ठहराया जाएँ।
- स्थानीय जैन धर्मावलम्बी युवक, बाल, वृद्ध मातायें, बहनें और अन्य सभी को रथ की अगवानी हेतु आमंत्रित करें। उन्हें आग्रहपूर्वक समारोह में सम्मिलित करें, उत्साह जनक वातावरण हेतु नगर को झण्डियों, तोरणद्वारों, ध्वज प्रतीक चिन्हों से सजाया जाये एवं रोशनी आदि की जाएँ।
- प्रातः और रात्रि में विशाल सभा का कार्यक्रम रख कर रथ के पात्र, सौधर्म इन्द्र, कुबेर, सारथी एवं आरती के लिए बोलियों/दानराशि के माध्यम से चयन किया जाएगा, उनके द्वारा भगवान महावीर का महामस्तकाभिषेक व शांतिधारा की जाएगी। शोभायात्रा का सौभाग्य दिया जाएँ।
- विशाल जन समुदाय के साथ 'पावापुरी अहिंसा रथ' की धर्म यात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से निकाली जाएगी।
- 'पावापुरी अहिंसा रथ' की व्यवस्था के लिए आप स्थानीय दो-तीन रथ संयोजक नियुक्त करें, जिससे वीर के संदेशों की महती प्रभावना हो सके।